भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-17, अंक-01 | वि.सं. 2077, | युगाब्द 5122 | मार्च-2021 | डिजिटल संस्करण

सदस्यता शुल्क :- संरक्षक : रु. 5000/-आजीवन : रु. 2000/-

मार्गदर्शक :

- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबन्ध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
  मो: 09451176775

सह सम्पादक :

- राजेश
  मो: 09793120738

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबन्धक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :
भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91,
निराला नगर, लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष:0522-4001837,
0522-2789406
मो:09450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :
E-mail:bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जन्म: 19 फरवरी 1630 निधन: 3 अप्रैल 1680

छत्रपति शिवाजी महाराज

वीर शिवा जी क्षत्रपति का आदर्श महान।
राष्ट्र-प्रेम हिंदुत्व का बना एक प्रतिमान।।
पूर्ण समर्पित राष्ट्र-हित, आश्रय दाता नाम।
विजय मार्ग के पथिक को वन्दन नमन प्रणाम।।

@शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका **सेवा संवाद** अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है | आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें |

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 26 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु **कार्पस फण्ड** भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा** - रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग कर के एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा सेवा** - रु. 5000/- की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. **विकलांग सहायता सेवा** - रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)** - रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण कर के न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति** - न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000
6. **सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक) पत्रिका** - रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग कर के सहायता करना।
7. **सेवा संवाद (मासिक)** - रू. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम** - रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. **विश्राम सदन - दिल्ली** - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु0 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. **अक्षय सेवा - दिल्ली** - पिछले 4 वर्षों से तीन अस्पतालों के निकट दोपहर के समय भोजन वितरण का कार्य इस प्रकल्प द्वारा किया जा रहा है| कुल 2000 से अधिक लोगों को यह सुविधा प्रतिदिन दी जाती है | एक स्थान पर एक दिन का खर्च लगभग 6000 रुपये आता है | हम कुछ दिनों के लिए इस प्रकल्प में सहयोग कर सकते हैं |
11. **CSR फंड** - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार कर मुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।
- अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. **6806100009948** (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. **30448433657** (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ इण्डिया, पटपड़गंज, नई दिल्ली - खाता सं. **605810110013350** (IFSC : BKID0006058)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

परमात्मा की इस त्रिगुणात्मिका सृष्टि में सबसे पहले पृषद नामक भक्ष्यान्न वनस्पतियां उत्पन्न हुई, फिर उड़ने वाले, अरण्य में चरने तथा गाँवों में रहने वाले पशु उत्पन्न हुए और इसके बाद मनुष्य का जन्म हुआ। इस प्रकार समस्त चेतन सृष्टि की उत्पत्ति हुई। मनुष्य के जन्म से पूर्व सृष्टि में सब कुछ स्वाभाविक रीति से होता था। सभी प्राणी सृष्टि के नियमों में बंधे हुए परस्पर पूरक काम करते रहे किन्तु मनुष्य के उत्पन्न होते ही संसार में अस्वाभाविकता आ गई। इसका कारण मनुष्य की स्वतंत्रता रही | वह सृष्टि के नियमों को भंग करता है, अपने स्वार्थ साधन में समस्त प्राणियों को दुखी कर देता है। परिणाम स्वरूप मनुष्य का अधोपतन होता गया और वह कर्मानुसार पशु, पक्षी, कीट, वृक्षादि योनियों के भोग भोगने के लिए विवश होता रहा है।

मनुष्य को अध: पतन से रोकने तथा मानव शरीर में छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, राग, मोह, अहंकार आदि जनित पापों से निवृत्ति के लिए सेवा एक सर्वोत्तम कर्म है। हम अपने चारों तरफ देख सकते हैं कि किस प्रकार सृष्टि के मानवेतर प्राणी अपने उत्थान के लिए सेवा कार्य में लगे हैं। गाय, भैंस, बकरी और भेड़ दूध देकर, भेड़ वस्त्रों के लिए ऊन देकर, घोड़े, बैल, गधे, ऊँट, खच्चर और हाथी आदि सवारी द्वारा, कुत्ते चौकीदारी से एक अच्छे साथी का काम देकर मनुष्य की सेवा करते हैं। व्याघ्र, बिल्ला, गिद्ध आदि मांसाहारी प्राणी मुर्दों को खाकर सफाई का काम देकर, सूअर, मुर्गे, चील, कौआ, चींटा आदि मल और सड़े मांस खाकर पृथ्वी को पवित्र बनाकर मानव की सेवा करते हैं। मछलियाँ तथा अन्य जल जन्तु पानी स्वच्छ करके, उड़ने वाले पक्षी और कृमि वायु में व्याप्त मल गन्दगी को खाकर, सर्प और बिच्छू आदि विषैले प्राणी भी जल, स्थल और वायु में व्याप्त विष को खाकर पृथ्वी को पवित्र बनाकर मानव की सेवा करते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक पशु पक्षी, कीड़े मकोड़े वैज्ञानिक अध्ययन करने में सहायक बनकर मनुष्य की सेवा करते हैं। भेंडे जमीन के अन्दर जहाँ पोल होता है वहाँ नहीं बैठती, जोंक बड़े-बड़े तूफानों को बतला देती है। तूफान आने वाला हो तो वह पानी के ऊपरी सतह पर नही तैरती, छोटी-छोटी चीटियाँ अग्नि, प्रपात, भूकम्प, वर्षा आने के पूर्व अपने अंडों को लेकर भागती हैं और प्रकारान्तर से हमें सावधान करके मनुष्य की सेवा करती हैं। जिस तरह पशु-पक्षी मनुष्य की नाना प्रकार से सेवा करते हैं उसी तरह वृक्ष भी फल, फूल, अन्न, औषधियाँ, वर्षा आदि अनेक प्रकार से अमूल्य साधनों को देकर मनुष्य की सेवा करते हैं। तो फिर हम मनुष्य क्यों नहीं निःस्वार्थ होकर परस्पर एक दूसरे अथवा अपने से पतित अभावग्रस्त दीनों की सेवा करें। सेवा ही हमें पतित होने से बचा सकती है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (13 अप्रैल 2021) को आरम्भ होने वाले नव सम्वत्सर विक्रमी संवत् 2078 के शुभ अवसर पर सेवा संवाद तथा न्यास परिवार की ओर से आप सभी के प्रति मंगल कामनाएँ।

शुभागमन नव संवत्सर,
जीवन सबका सुखमय हो।
हम हों समाज में समरस
हर जीवन ज्योतिर्मय हो।।
रहें असत से दूर सदा
पुनि प्रीति परस्पर दृढ़ हो।
हम करें सभी की सेवा
धरती पर अमृत वर्षा हो।।

■शिव

श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (गुरुजी)

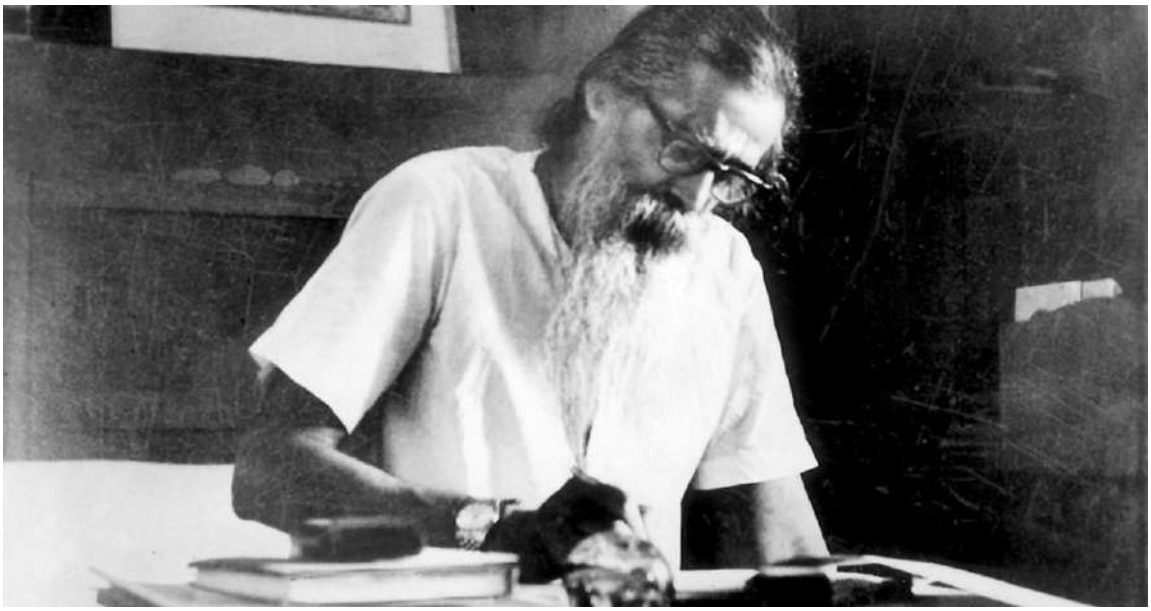

श्री गुरुजी हिन्दू जीवन दृष्टि के मूर्तिमान रूप थे । अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति के लिये युगानुरूप ज्ञान, भक्ति और कर्म मार्गों के अनुसरण का एक अप्रतिम उदाहरण उन्होंने अपनी जीवन यात्रा में प्रस्तुत किया जो वर्षों वर्षों तक प्रेरणा देता रहेगा। सचमुच हम सब भाग्यशाली हैं जो हमें उनका प्रत्यक्ष मार्गदर्शन मिला और आज उनके सपनों को साकार करने का कार्य शिक्षा और समाज के विविध क्षेत्रों में यथाशक्य प्रयास किया जा रहा है । राष्ट्र-देव की आराधना का जो मार्ग उन्होंने दिखाया, उनकी स्मृति हमें कुछ कर दिखाने की प्रेरणा देती है, हमारे भीतर छिपी प्रतिभा का उन्मेष कर उसे कर्ममार्ग में समर्पित कर देने का आह्वान करती है । शिवोभूत्वा शिवं यजेत् का घोषमन्त्र उन्होंने हमें दिया था जो उन्हें एक शाश्वत गुरु का पद प्रदान करता है । श्री गुरुजी वेदान्त दर्शन द्वारा प्रस्थापित सनातन सत्य के प्रति एकाग्र निष्ठा के साथ जिए और हजारों को जीने की चाह अपने शिक्षण-प्रशिक्षण प्रेरणा से दे गये हैं। उनका यह वरदान विश्व मानवता को संस्कृति संरक्षण में महतीय योगदान है । उनके व्यक्तित्व का अध्यात्म पक्ष उनके अहर्निश प्रवास एवं हजारों-लाखों से सम्पर्क के कारण हमारी दृष्टि-पथ से ओझल हो गया । हम उन्हें एक संगठन के प्रमुख के रूप में ही जान पाये, उनकी आध्यात्मिक भाव-भूमि की गहराई को नहीं । लेकिन जब हमारा ध्यान उनकी कृतियों की महानता की ओर जाता है तब यह स्पष्ट हो जाता है कि संघर्ष के बीच अपने ध्येय-पथ पर अविचल बढ़ते जाना आध्यात्मिक बल से ही सम्भव हो सका। धर्म को जिस प्रकार उन्होंने समाज से जोड़ा और राष्ट्र को ही अराध्य देव बनाकर जिया उसके पीछे भी उनका अध्यात्म बल ही था।

गुरूजी का जन्म फाल्गुन मास की एकादशी विक्रमी संवत् 1963 तदनुसार 19 फ़रवरी 1906 को महाराष्ट्र के रामटेक में हुआ था । वे अपने माता-पिता की चौथी संतान थे । उनके पिता का नाम श्री सदाशिव राव उपाख्य 'भाऊ जी' तथा माता का श्रीमती लक्ष्मीबाई उपाख्य 'ताई' था । उनका बचपन में नाम **माधव** रखा गया पर परिवार में वे **मधु** के नाम से ही पुकारे जाते थे । पिता सदाशिव राव प्रारम्भ में डाक-तार विभाग में कार्यरत थे परन्तु 1908 में उनकी नियुक्ति शिक्षा विभाग में अध्यापक पद पर हो गयी ।

हिन्दुत्व या भारतीयता के बारे में फैलाये गये अथवा फैलाये जाने वाले सारे भ्रमों को भेदकर एक समरस और सम्पन्न भारत के पुनरोदय-यज्ञ में आजीवन सहभागी होने का उदात्त लक्ष्य जो गुरु जी के अलौकिक व्यक्तित्व व कृतित्व से हमें मिला है उसके आलोक में हमारी जीवन यात्रा भी चलती रहेगी ।

हम अपने राष्ट्र को सुखी, सम्पन्न और वैभवशाली बनाने में सक्षम- समर्थ हो सकेंगे ।

समर्थ भारत

❖ परिचय

कोविड-19 के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों से पूरा विश्व प्रभावित हुआ है। भारत के लिए यह आपदा को संभावना में बदलने का समय है। भारत की 130 करोड़ आबादी में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, बस आवश्यकता है उस प्रतिभा को निखारकर उसे अवसर दिया जाये। **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** ने वर्तमान स्थिति का बारीकी से निरीक्षण और मूल्यांकन किया और पाया है कि एक अधिक समग्र मॉडल की आवश्यकता है जो प्रशिक्षण और स्व-रोजगार के लिए एक मंच हो सके। **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** भारत के युवाओं को आगे आने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से **समर्थ भारत** के नाम से एक व्यापक कार्यक्रम की संरचना प्रस्तुत कर रहा है।

❖ मुख्य भाग

समर्थ भारत कार्यक्रम निम्न चार उद्देश्यों पर काम करता है |

1. अपना काम: जो भी युवा अपना कोई स्वरोजगार शुरू करना चाहते हैं उनको प्रशिक्षण, फाइनेंस के संबंध में जानकारी और मार्किट में उपलब्ध संभावनाओं आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

2. अपना उद्योग: **जो युवा अपना लघु उद्योग** लगाना चाहते हैं, उन युवाओं को उचित प्रशिक्षण देकर सरकारी योजनाओं से जोड़ने का प्रयास समर्थ भारत IID के सहयोग से करता है।

3. जॉब एवं औद्योगिक प्रशिक्षण: इस प्रकल्प में रोजगार शिविरों के माध्यम से हम युवायों को रोजगार दिलवाने में सहयोग करते हैं एवं जिन कम्पनियों में प्रशिक्षण की सुविधा होती है वहाँ पर प्रशिक्षण भी दिलवाया जाता है | प्रशिक्षण के बाद प्रमाण पत्र भी दिया जाता है |

4. ई-लर्निंग: समर्थ भारत की वेबसाइट www.samarthbharat.net पर विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध हैं। जिन्हें NSDC, लर्नेट ग्रुप और अमृता ग्रुप के सहयोग से लिया गया है | अभ्यर्थी रजिस्ट्रेशन करके अपने रुचि अनुसार व्यक्तित्व विकास या कौशल के किसी कोर्स का चुनाव करके लाभ ले सकता है। कोर्स पूरा करने पर प्रमाण पत्र भी भी दिया जाता है |

❖ रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया

सर्वप्रथम अभ्यर्थी समर्थ भारत की वेबसाइट www.samarthbharat.net पर जाकर रजिस्टर विकल्प पर क्लिक करे, मोबाइल नंबर ओटीपी के माध्यम से सत्यापित करें, तत्पश्चात फॉर्म में मांगी गई अन्य जानकारी को भरकर सबमिट करे। इस प्रकार उसका खाता बन जायेगा, मोबाइल नंबर ही यूजरनेम होगा।

❖ अभियान

- दिल्ली के अलग–अलग जिलों में सेवा बस्तियों में 30 रोजगार शिविरों के द्वारा पंजीकरण अभियान |
- दिल्ली के सभी PMKVY सेंटरों के अधिकारियों के साथ NSDC के सहयोग से मीटिंग |
- 9 PMKVY सेंटर में प्रशिक्षण हेतु युवायों का पंजीकरण कराने के लिए सेवा भारती के सहयोग से बड़ा अभियान।
- ग्रेटर नोयडा में एक बड़े रोजगार शिविर का आयोजन जिसमे 18 कम्पनियों तथा 526 अभ्यर्थियों ने भाग लिया।
- पूर्वोत्तर के कार्यकर्ताओं के साथ **अपना काम** को वहाँ किस तरह से शुरु किया जा सकता है इसके लिए विस्तृत चर्चा।

❖ आगामी अभियान

- 6 मार्च रोजगार शिविर फरीदाबाद।
- अपना काम के 7 व्यवसायों के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण केंद्र खोलना।
- 18, 19 और 20 मार्च को आत्मनिर्भर भारत मेला |

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

माह फरवरी 2021 में कुल लाभान्वित रोगी विवरण-

क्र.	सेवा केन्द्र	कुल लाभान्वित रोगी
1.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	237
	कुल लाभान्वित रोगी	**237**

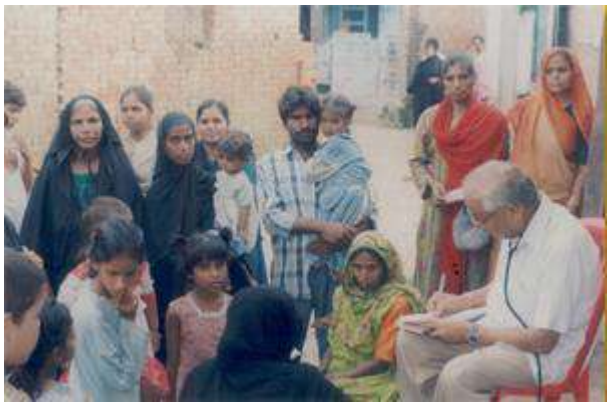

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र,
सी-91, निराला नगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	316
2.	होम्योपैथिक	298
कुल लाभान्वित रोगी सं0		**614**

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	2800

इस प्रकार तीनों केन्द्रों पर माह फरवरी 2021 तक कुल लाभान्वित रोगी संख्या 3651 रही।

*** कई सेवाएँ लॉकडाउन के कारण प्रभावित रहीं।**

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अन्त्योदय हेल्थ मिशन द्वार
माह फरवरी 2021 में लाभान्वित रोगी विवरण

नेत्र परीक्षण	364
चश्मा वितरण	266
मोतियाबिन्द ऑपरेशन	00
पैथालॉजी	08

आलोक : नेत्र एवं पैथालॉजिकल जाँच केवल 20/- के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

पावर ग्रिड विश्राम सदन, KGMU

के.जी.एम.यू. लखनऊ

फरवरी 2021 में ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या

राज्य	माह फरवरी 2021 में ठहरने वालों की संख्या
उत्तर प्रदेश	797
दिल्ली	01
बिहार	36
महाराष्ट्र	08
मध्य प्रदेश	02
कुल	**844**

माधव सेवा आश्रम

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरनेवाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	राज्य	माह फरवरी 2021
1.	उत्तर प्रदेश	6668
2.	उत्तराखण्ड	134
3.	बिहार	2968
4.	झारखण्ड	271
5.	उड़ीसा	42
6.	मध्य प्रदेश	221
7.	छत्तीसगढ़	--
8.	राजस्थान/गुजरात	--
9.	महाराष्ट्र	--
10.	नेपाल	24
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	02
12.	पश्चिम बंगाल	--
13.	अन्य प्रान्त	12
	योग	**10342**

विश्राम सदन, दिल्ली

सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली

माह फरवरी 2021 में ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या

जनवरी	479
फरवरी	491

पावर ग्रिड विश्राम सदन, पटना

आई.जी.आई.एम.एस. पटना

वर्ष 2021 में पटना विश्राम सदन में **ठहरने वाले व्यक्तियों का मासिक विवरण**

माह	ठहरने वाले व्यक्तियों की सं0
अप्रैल 20 - फ़रवरी 21	
मार्च 2021	979
कुल संख्या	

25वाँ-26वाँ सेवा-सम्मान समारोह सम्पन्न

28 फरवरी 2021, नई दिल्ली। भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा आयोजित प्रगति बिहार, भीष्मपितामह मार्ग, निकट-जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली स्थित **श्री सत्य सांई इण्टरनेशनल सेण्टर** के सभागार में सम्पन्न **25वां-26वां भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान समारोह** में पोर्टब्लेयर अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की 'देवी माँ' (सन्यासिनी चैतन्यानन्दमयी), मदुरै, तमिलनाडु से श्री वी. पी. मणिकन्दन जी, किश्तवाड़ जम्मू कश्मीर से श्री श्रीकृष्ण शर्मा एवं पाण्डिचेरी से श्रीमती चित्रा शाह जी को सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री सुहासराव हिरेमठ जी उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता हिरेमठ जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि श्रद्धेय भाऊराव देवरस जी स्वयं जीवन पर्यन्त सेवा कार्यों में लगे रहे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज भी हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। उनके द्वारा प्रेरित शिक्षा और स्वास्थ्य-सेवा के अनेक प्रकल्प आज भारत में चल रहे हैं। सेवाभावी सेवाव्रतियों का सम्मान भी उन्हीं की प्रेरणा का सुफल है। मेरा यह स्पष्ट मानना है कि जहां भी निःस्वार्थ भाव से सेवा होती है वहां समाज में सकारात्मक परिवर्तन अवश्य होता है। वहां परमात्मा का वास होता है। 'नर सेवा नारायण सेवा' हमारे जीवन का लक्ष्य बने ऐसी कामना है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ न्यास के अध्यक्ष श्रीमान ओमप्रकाश गोयल जी की अध्यक्षता में द्वीप प्रज्ज्वलन, मुख्य अतिथि एवं सेवाव्रतियों के स्वागत सम्मान के साथ हुआ। सेवाव्रतियों के सम्मान में अंगवस्त्र, श्रीफल, सेवा-साहित्य, प्रतीक चिह्न एवं दो-दो लाख रुपये की विनम्र धनराशि (चेक द्वारा) दी गयी। कार्यक्रम में **'देवी मां' (संन्यासिनी चैतन्यानन्दमयी)** किन्हीं अपरिहार्य कारणों से उपस्थित नहीं हो पायीं । उनके स्थान पर प्रतिनिधि रूप में फरीदाबाद की सन्यासिनी **मां मुक्तिप्राणानन्दा** जी 'साधु माँ' उपस्थित रहीं | उन्होंने बताया कि प्रणब कन्या संघ के माध्यम से 12 सालों से पोर्टब्लेयर में अनाथ कन्याओं के लिए अनाथालय संचालित हो रहा है तथा उन कन्याओं को आत्मनिर्भर बनाने का कार्य विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से किया जाता है। मदुरै, तमिलनाडु से पधारे वी.पी. मणिकन्दन जी ने बताया कि बच्चों की शिक्षा के लिए सभी तरह के प्रोत्साहन कार्य, अनाथालयों एवं वृद्धाश्रमों में भोजन वितरण, लावारिस बन्धुओं के शवों का अन्तिम संस्कार आदि भी जनसहयोग के माध्यम से किया जाता है।

किश्तवाड़, जम्मू कश्मीर से पधारे श्री श्रीकृष्ण शर्मा ने बताया कि जनकल्याण आपदा सेवा समिति, अनाथ बच्चों, विधवाओं, सड़क दुर्घटना में आहत एवं वनों में आग लगने से घायल आदि लोगों की हर प्रकार से सहायता समाज के सहयोग से की जाती है। पाण्डिचेरी से श्रीमती चित्रा शाह जी सभागार के मध्य ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित हुई | उन्होंने बताया कि सत्य स्पेशल स्कूल पाण्डिचेरी के माध्यम से मानसिक एवं बीमार बच्चों और बड़ों की शिक्षा तथा उनकी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास पैदा करने का कार्य किया जा रहा है। नवजात शिशुओं का परीक्षण कर उनका सही समय पर उपचार हो सके ऐसी व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जा रही है।

कार्यक्रम में एकल गीत श्री जनमेजय जी, अभिनन्दन पत्र का वाचन श्रीमती सुमन गुप्ता एवं श्री ऐश्वर्य गोयल द्वारा, स्वागत भाषण स्वागताध्यक्ष श्री मनोज पटावरी जी और धन्यवाद ज्ञापन श्री रमेश अग्रवाल जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभसमापन श्रीमती पद्मा जी द्वारा राष्ट्र गीत 'वन्दे मातरम्' के साथ हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन श्री महेश बाबू गुप्ता जी द्वारा किया गया। न्यास का परिचय एक वीडियो दिखाकर किया गया।

महामना शिक्षण संस्थान, अर्जुन गंज, लखनऊ

दीक्षारम्भ कार्यक्रम, 27 फ़रवरी 2021, लखनऊ

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान में 27 फरवरी दिन शनिवार को दीक्षारम्भ कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें 31 बालकों को दीक्षा दी गयी। कार्यक्रम के अन्तर्गत अपरान्ह 1 बजे से यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें महामना शिक्षण संस्थान के सदस्य डा. नरेन्द्र अग्रवाल एवं सभी पदाधिकारियों के द्वारा यज्ञ, हवन एवं संस्थान के बालकों द्वारा गुरुजनों को तिलक लगाकर माल्यार्पण करके दीक्षा प्राप्त की। कार्यक्रम में आये हुए अतिथियों के साथ महामना शिक्षण संस्थान की कोर कमेटी के सदस्यों और संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा हवन-पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् 3:30 बजे से मंच के कार्यक्रम प्रारम्भ हुए। कार्यक्रम के मुख्य-अतिथि जगद्गुरु पद्मविभूषण स्वामी रामभद्राचार्य जी, मुख्य वक्ता मा. दत्तात्रेय होसबले जी, विशिष्ट अतिथि मा. डा. कृष्ण गोपाल जी, श्री प्रमोद तिवारी, श्री रंजीव तिवारी जी आदि सभी के द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन किया गया तथा गीत के साथ मंच के कार्यक्रम संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किये गये जिसमें, देशगीत, नाटक (पं. मदनमोहन मालवीय), गीता के श्लोक आदि मनमोहक प्रस्तुतियाँ थी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त अतिथि स्वागत आचार्य सम्मान किया गया तथा श्रीमती अर्चना जी द्वारा बालिका प्रकल्प का संक्षिप्त परिचय दिया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्रीमान् दत्तात्रेय होसबले जी द्वारा कहा गया कि संत रविदास जी ने धर्म एवं सेवा के कार्य को आगे बढ़ाया। क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद को याद करते हुए कहा कि आजादी के आन्दोलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आजाद अन्तिम समय तक आजाद रहे। वहीं पं. मदनमोहन मालवीय ने भारतीय संस्कृति व परम्पराओं के आधार पर की परिकल्पना को मूर्त रूप प्रदान किया। महामना शिक्षण संस्थान मालवीय जी के आदर्शों पर चलकर विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने में सहायक होगा। महामना शिक्षण संस्थान में आर्थिक दृष्टि से दुर्बल छात्रों को आधुनिक भारत के निर्माण के लिए तैयार किया जाता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी ने कहा भारत को आध्यात्मिक स्वतंत्रता दिलानी है और हमें अब समान नागरिक संहिता चाहिए जिससे देश का असंतुलन समाप्त हो जायेगा। उन्होंने श्री रामचरितमानस को राष्ट्रीय ग्रन्थ और हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित करने की माँग की। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 और 35ए हमें मर्माहत कर रहे थे। हमारा लक्ष्य है हम पूरा कश्मीर लेगें। जब देश में आजादी का सूर्योदय होने वाला था ऐसे समय में डा. केशव बलिराम

हेडगेवार जी का जन्म हुआ जिन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। स्वामी जी ने महामना शिक्षण संस्थान के इस पावन कार्य में सहयोग करने का आह्वाहन किया तथा सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम निरन्तर इस संस्थान के बच्चों के शिक्षण में सहयोग करते रहेंगे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के साथ हुआ।

पहल निर्धन मेधावी बालिकाओं को उच्च शिक्षित करने की- भाऊराव देवरस सेवा न्यास के अन्तर्गत महामना शिक्षण संस्थान (बालिका प्रकल्प) का शुभारम्भ कोरोना काल की चुनौतियों के मध्य ही वर्तमान शैक्षणिक सत्र (2020-21) से लखनऊ में हो चुका है। इस प्रकल्प के द्वारा चरणबद्ध तरीके से मेधावी परन्तु साधनहीन बालिकाओं का चयन किया जाता है। वर्तमान सत्र में 17 बालिकाएं हमारे प्रकल्प के सहयोग से निःशुल्क ऑनलाइन कोचिंग सुविधा का लाभ उठाते हुए मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश हेतु प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही हैं। निःशुल्क कोचिंग के अतिरिक्त प्रत्येक बालिका को एक स्मार्टफोन, संबन्धित विषयों की पुस्तकों का पूरा सेट व साथ ही 2000/- महीना प्रति बालिका को छात्रवृत्ति के रूप में उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि उनकी पढ़ाई सम्बन्धी जरूरतें निर्विघ्न रूप से पूरी होती रहें। इस प्रकल्प का उत्तरदायित्व पूर्णतः महिलाओं के हाथों में है, जहाँ प्रकल्प से जुड़ी प्रत्येक सदस्या अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा से कर रही है। यहाँ पर एक आन्तरिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक बालिका के लिए एक संरक्षिका नियुक्त है जो नियमित रूप से अपनी पालिता के सम्पर्क में रहते हुए उसकी प्रगति की समीक्षा भी करती रहती है। समय-समय पर माननीय डॉ कृष्णगोपाल जी का मार्गदर्शन सभी में नवीन ऊर्जा का संचार कर देता है। कुल मिलाकर इस नये प्रकल्प की प्रगति संतोषजनक व उत्साहवर्द्धक है।

अभी 27.02.2021 को महामना शिक्षण संस्थान (बालक प्रकल्प) के दीक्षारम्भ कार्यक्रम का सफल आयोजन अर्जुनगंज, लखनऊ में धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें माननीय दत्तात्रेय होसबोले जी तथा जगतगुरु रामभद्राचार्य जी की गरिमामयी उपस्थिति व उनके आशीर्वचनों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसी प्रकल्प की प्रस्तावना व रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई। आगामी 24.04.2021 को बालिकाओं के छात्रावास हेतु भूमिपूजन कार्यक्रम निश्चित किया गया है। अभी ये प्रकल्प अपनी शैशवावस्था में ही है, पर इसे भव्य व उन्नत बनाने के लिए सभी सदस्यगण पूरे मनोयोग से प्रयासरत है।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प एवं उनके प्रमुख

प्रकल्प का नाम	प्रकल्प प्रमुख	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती अर्चना दीक्षित	9821483861
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन के.जी.एम.यू. लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक)लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धमासिक) लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
विश्राम सदन, IGIMS पटना (बिहार)	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457

गोलोकधामवासी श्री तेजपाल सेठी

सुन्दर सुगठित शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व वाले श्री तेजपाल सेठी गत 1 फरवरी 2021 को गोलोकधाम वासी हो गए। आपका जन्म पंजाब के नवाशहर/तत्कालीन अविभाजित भारत में 20 मई 1940 को हुआ था। 81 वर्ष की आयु तक वे हमारे बीच रहें। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा नवांशहर माध्यमिक शिक्षा शाहजहाँपुर तथा उच्च शिक्षा बरेली में प्राप्त की 16 वर्ष की उम्र में संघ से जुड़ गए। आपने जीवन काल में जिलाकार्यवाह सहित अन्य संघ दायित्वों का निर्वाह किया। विद्याभारती योजना में सर्वप्रथम वह रामपुर जिला केन्द्र के विद्यालय में आचार्य बनें फिर अल्मोड़ा, बरेली, शाहजहाँपुर, मुजफ्फरनगर, लखनऊ जिला केन्दों पर प्रधानाचार्य का दायित्व ग्रहण किया।

1972 में जब उन्होंने गाजियाबाद में नेहरू नगर के प्रधानाचार्य का दायित्व सम्भाला और वहीं केन्द्र पर रहते अपनी नियमित सेवाएं प्रदान करते रहे। **1982 में शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति उत्तर प्रदेश के सहमंत्री बने। उन दिनों उत्तराखण्ड सहित सम्पूर्ण पश्चिमी उत्तर प्रदेश आज का बृज और उत्तरांचल प्रान्त का विद्या भारती का कार्य सम्भालते रहे।** 1975 में आपातकाल के विरूद्ध उद्घोष किया और 5 मास कारागार में निरूद्ध रहे। 1999 में उ0प्र0 शिक्षा विभाग के प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण में सहभाग किया। शिशु मन्दिरों की परीक्षा एवं मूल्यांकन का दायित्व अविभाजित उत्तर प्रदेश का बखुबी निभाया। शारीरिक एवं घोष के कार्यक्रमों में उनकी पूर्ण दक्षता थी। 1978 में अखिल भारतीय स्तर पर दिल्ली के रिंगरोड पर बसे शिशु संगम के शारीरिक एवं घोष के कार्यक्रमों का संचालन पूर्ण किया। **अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख के दायित्व के साथ खेलकूद विभाग के सहसंयोजक भी रहे।** 1999 में गाजियाबाद में आयोजित अखिल भारतीय स्तर के खेलकूद समारोह का भव्य आयोजन उनके मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ था। आयोजन के उद्घाटन समारोह में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई जी मुख्य अतिथि थे। बाद में शिशु शिक्षा समिति प्रान्त के सचिव रहते हुए उन्होंने नियमित सेवाओं से अवकाश प्राप्त किया। अपने कार्यकाल में समिति से जुड़े विद्यालायों के भूमि भवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में उनका बड़ा योगदान था। विद्यालयों की स्थापना में उनकी महती भूमिका थी।

नियमित सेवाओं से अवकाश प्राप्ति के बाद भी वह विद्या भारती पश्चिमी उ0प्र0 के सचिव के रूप में अपनी सेवाएं देते रहे। जीवन पर्यन्त उनकी कार्यकुशलता प्रशासनिक क्षमता एवं संगठन कौशल अद्भुत थी। उधर पिछले 2-3 वर्षों से उन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयाँ रहती थीं। कार्य के प्रति उनकी लगन एवं सोच कैसी थी, इसका उदाहरण उनकी धर्म पत्नी एवं पुत्रों ने बताया कि प्रायः रात्रि के तीसरे व चौथे प्रहर में नींद खुल जाने पर वह योजना के कार्यकर्ताओं तथा कार्यों के बारे में चर्चा करने लगते थे। वह अपने पीछे धर्मपली सहित भरा पूरा परिवार, बेटे, बहुयें, बेटी, दामाद व पौत्र व पौत्रियाँ छोड़ गए है। दायित्वों के प्रति समर्पित रहकर राष्ट्रनिर्माण व शिक्षा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान करने वाले कुछ बिरले ही होते है, श्री सेठी जी उनमें से एक थे।

गोलोकवासी कीर्तिशेष तेजपाल सेठी जी की दिव्यात्मा को नमन करते है। विद्या भारती, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सेवा संवाद एवं सेवा चेतना परिवार के हम सभी उन्हें अपनी स्मृतियों में संजोए हुए उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।